परव्योम को उद्भासित करते हैं और वृक्ष के मूल के समान अपनी विविध शक्तियों का विस्तार भी करते हैं।'

इन श्लोकों से सिद्ध होता है कि श्रीभगवान् परतत्त्व परब्रह्म हैं और अपनी विविध परा-अपरा शक्तियों के रूप में सर्वव्यापक हैं।

रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः।
प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु।।८।।

रसः=रस हूँ; **अहम्**=मैं; **अप्सु**=जल में; **कौन्तेय**=हे अर्जुन; **प्रभा अस्मि**=मैं प्रकाश हूँ; **शशिसूर्ययोः**=चन्द्रमा एवं सूर्य में; **प्रणवः**=ओम्; **सर्व**=सम्पूर्ण; **वेदेषु**=वेदों में; **शब्दः**=ध्वनिस्फुरण; **खे**=आकाश में; **पौरुषम्**=सामर्थ्य; **नृषु**=पुरुषों में।

अनुवाद

हे कुन्तीनन्दन अर्जुन! मैं जल में रस हूँ और सूर्य एवं चन्द्रमा में प्रभा हूँ तथा वैदिक मन्त्रों में ओंकार हूँ; आकाश में शब्द हूँ तथा मनुष्यों में पुरुषत्व हूँ।।८।।

तात्पर्य

इस श्लोक में वर्णन किया गया है कि किस प्रकार अपनी विविध प्राकृत एवं चिन्मय शक्तियों के द्वारा श्रीभगवान् सर्वव्यापक हैं। परमेश्वर श्रीकृष्ण की प्रारम्भिक अनुभूति उनकी नाना शक्तियों के रूप में ही होती है। यह उनकी निर्विशेष अनुभूति है। जैसे सूर्य का अधिष्ठातृ-देवता एक पुरुष-विशेष है जिसका अनुभव उसकी सर्वव्यापक शक्ति, सूर्यप्रभा के रूप में होता है। उसी प्रकार अपने नित्य धाम में विराजमान होते हुए भी भगवान् अपनी सर्वव्यापी शक्तियों के द्वारा अनुभवगम्य हैं। रस जल का धर्म है। सागर का जल पीने योग्य नहीं है क्योंकि उसमें जल का शुद्ध स्वारस्य लवण द्वारा दूषित रहता है। जल के प्रति आकर्षण उसके रस की शुद्धता पर निर्भर करता है; यह विशुद्ध रस भी भगवान् की एक शक्ति है। निराकारवादी को जल के स्वारस्य से ईश्वर-सन्निधि का बोध होता है, जबकि साकारवादी प्यास-निवृत्ति के लिए कृपापूर्वक जल दान करने के लिए श्रीभगवान् का जयकार भी करता है। भगवत्-अनुभूति की यह पद्धति है। वस्तुतः साकारवाद और निराकारवाद में कोई मतभेद नहीं है। श्रीभगवान् के तत्त्व को जानने वाला जानता है कि निराकार एवं साकार दोनों प्रत्येक पदार्थ में एक साथ विद्यमान हैं। परस्पर विरोध का प्रश्न नहीं उठता। इसी कारण श्रीचैतन्य महाप्रभु ने **अचिन्त्यभेदाभेद** नामक दिव्य सिद्धान्त को स्थापित किया है।

सूर्य तथा चन्द्रमा की ज्योत्स्ना मूलरूप में ब्रह्मज्योति, अर्थात् श्रीभगवान् की निर्विशेष प्रभा से निकली है। प्रत्येक वैदिक मन्त्र के प्रारम्भ में श्रीभगवान् के सम्बोधन के रूप में प्रयुक्त होने वाला **प्रणव** अथवा **ओंकार** भी उन्हीं से प्रकट हुआ है। निर्विशेषवादियों को परमेश्वर श्रीकृष्ण को उनके असंख्य नामों में से किसी से